ब्राह्मण कुल की सदा रखना लाज ....
(Geet on AM 9 July, 2017)

ब्राह्मण कुल की सदा रखना लाज, तो ही मिलेगा तुम्हे स्वर्ग का ताज,
करना नहीं यहाँ कोई होशियारी, तुमको तो बनना है सम्पूर्ण निर्विकारी

भक्ति से मिलता है भावना का फल, बाबा यहाँ देते संगठन का बल,,
बाबा मिला परिवार मिला, जीवन श्रेष्ठ बनाने का ये सहारा मिला ...
.... तो, गाते रहना सदा ये ही साज ...
ब्राह्मण कुल की सदा रखना लाज ....

ब्रह्माकुमार और कुमारी बन जाना, अविनाशी अधिकार का ये है स्टाम्प लगवाना,
अल्पज्ञ आत्मायों को खुश करके क्या पाया, लौकिक लोकलाज के पीछे सर्वस्व गवायाँ,
.... होता है कोई तो, होने दो उसे नाराज ...
ब्राह्मण कुल की सदा रखना लाज ....

रहमदिल बन दो सबको रहम की निगाह, परिवर्तन हो सबका शुभभावना हो चाह,,
बाप और दादा कर्मफल से न्यारे, खेल देख बच्चो के वतन से मुस्काते....
.... अब, ना हो ऐसा कर्म जो हो जाओ तुम बेताज..
ब्राह्मण कुल की सदा रखना लाज ....

तुमको रहना है सदा योगयुक्त, उसके लिए बनो बंधनमुक्त,,
साक्षी हो देखो सबका पार्ट, घृणा से दूर रहने की है ये आर्ट,
.... विकर्माजीत बनने का व्रत लो तुम आज ..
ब्राह्मण कुल की सदा रखना लाज ....

कर्मबंधन मुक्त ही ज्ञानी – योगी कहलाता, बहुत काल का अभ्यास ही प्रालब्ध दिलवाता,,
विशेषताओ को धारण कर बनो विशेषमणि, शुभभावना शुभकामना के तुम तो हो धनी,
.... ये है जीवन को श्रेष्ठ बनाने का राज ..
ब्राह्मण कुल की सदा रखना लाज ...

आदि रत्न तो है इस यज्ञ की भुजा, खेल समझ बहुत कुछ इन्हें सहना पड़ा,,
बाप को पुरानी वस्तु की वैल्यू का पता, इस ड्रामा के हीरो हो आप ही सदा ..
.... तो समर्थ ऐसा बनो, हो जो बाप को भी नाज ..
ब्राह्मण कुल की सदा रखना लाज ....